दिल्ली:एक सफ़र

HIN 527

स्नाकोतर कला (हिन्दी प्रथम वर्ष)

सेजल मयेकर

अनुक्रमांक:23P0140026

PR NUMBER :202005244

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाला

हिंदी अध्ययन शाखा

15/20

3/05/24

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

GOA UNIVERSITY
TALEIGAO PLATEAU
GOA

अनुक्रमणिका

क्र	अनुक्रमणिका	पृष्ट क्र
1	प्रस्तावना	2 - 3
2	दिल्ली क्षेत्र में अध्ययन यात्रा	3 - 25
3	निष्कर्ष	26

प्रस्तावना

यात्रा करना मनुष्य की नैसर्गिक प्रवृत्ति है। हम अगर मानव इतिहास पर नज़र डालें तो पाएँगे कि मनुष्य के विकास की गाथा में यायावरी का महत्वपूर्ण योगदान है। अपने जीवन काल में हर आदमी कभी-न-कभी कोई-न-कोई यात्रा अवश्य करता है लेकिन सृजनात्मक प्रतिभा के धनी अपने यात्रा अनुभवों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर यात्रा-साहित्य की रचना करने में सक्षम हो पाते हैं। प्रस्तुत प्रकल्प में मैंने दिल्ली यात्रा का वर्णन किया है।दिल्ली भारत की राजधानी ही नहीं, भारत का दिल भी है। यह संसार के सुन्दर नगरों में से एक है। यह भारत का प्राचीनतम नगर है। यह यमुना नदी के तट पर बसा हुआ है। प्रस्तुत प्रकल्प के अंतर्गत दिल्ली के ऐतिहासिक जगह, उनकी संस्कृति, जीवन शैली पर प्रकाश डाला है।

घूमना फिरना हम सबको बहुत अच्छा लगता है। छात्रों को पढ़ाई के साथ-साथ कहीं अलग जगह जैसे नैचरं, हिस्टोरिकल प्लेस आदि जगह भ्रमण के तौर पर ले जाना चाहिए। ऐसा करने से बच्चों के मानसिक विकास के साथ-साथ नई-नई चीज़े सीखने को मिलती हैं, ठीक हमारे विश्वविद्यालय द्वारा दिल्ली में एक यात्रा आयोजित की थी। और यह हमारा पाठ्यक्रम का भाग था जिसका शीर्षक था हिंदी क्षेत्र में अध्ययन यात्रा। यह हमारी अध्ययन यात्रा 18 मार्च 2024 से लेकर 26 मार्च तक थी। दिल्ली यात्रा करने का मुझे जब पहली बार मौका मिला तो मुझे बहुत खुशी हुई। हमने हमारी यात्रा के लिए जरूरत के समान,कपड़े,दवाइयां, पैसे आदि सामान पैक कर लिया। 18 मार्च दोहपर के साडेतीन बजे हमे ट्रेन थी,ट्रेन का नाम गोवा एक्सप्रेस था। लेकिन ट्रेन देर से आने के कारण हमें गोवा से 5:00 दिल्ली के लिए रवाना होना पड़ा। रेलगाड़ी का अनुभव बहुत ही मनोरंजक था। 2 दिन के रेल यात्रा के बाद हम 20 मार्च को सुबह दिल्ली पहुंचे। दिल्ली पहुंचने के बाद हम मेट्रो के द्वारा अपने होटल में पहुंचे। मेट्रो का यहां सफर हमारे लिए बहुत ही अद्भुत था क्योंकि हम पहली बार मेट्रो से सफर कर रहे थे। होटल पहुंचते ही थोड़ा आराम विश्राम करने के बाद 20 मार्च को सबसे पहले हम अक्षरधाम मंदिर गए। हम मेट्रो के द्वारा अक्षरधाम मंदिर पहुंचे। नई दिल्ली में बना स्वामिनारायण अक्षरधाम मन्दिर एक अनोखा सांस्कृतिक तीर्थ है। इसे ज्योतिर्धर भगवान स्वामिनारायण की पुण्य स्मृति में बनवाया गया है। इसके मुख्य देव भगवान स्वामीनारायण है। यह परिसर १०० एकड़ भूमि में फैला हुआ है। दुनिया का सबसे विशाल हिंदू मन्दिर परिसर होने के नाते २६ दिसम्बर २००७ को यह गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स में शामिल किया गया। अक्षरधाम मन्दिर को गुलाबी, सफेद संगमरमर और बलुआ पत्थरों के मिश्रण से बनाया गया है। इस मंदिर को बनाने में स्टील, लोहे और कंक्रीट का इस्तेमाल नहीं किया गया। मंदिर को बनाने में लगभग पांच साल का समय लगा था। श्री

अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था के प्रमुख स्वामी महाराज के नेतृत्व में इस मंदिर को बनाया गया था। करीब 100 एकड़ भूमि में फैले इस मंदिर को 11 हजार से ज्यादा कारीगरों की मदद से बनाया गया। पूरे मंदिर को पांच प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है। मंदिर में उच्च संरचना में 234 नक्काशीदार खंभे, 9 अलंकृत गुंबदों, 20 शिखर होने के साथ 20,000 मूर्तियां भी शामिल हैं। मंदिर में ऋषियों और संतों की प्रतिमाओं को भी स्थापित किया गया है।मंदिर में प्रवेश फ्री है लेकिन अंदर जाने के अलग-अलग चार्ज हैं। मंदिर में अंदर जाने के लिए कुछ विशेष नियम भी बने हैं। प्रवेश करने के लिए ड्रेस कोड भी बना है। आपके कपड़े कंधे और घुटने तक ढके होने चाहिए। क्योंकि वस्त्र भी संस्कार व संस्कृति के परिचायक होते हैं। मंदिर में रोजाना शाम को दर्शनीय फव्वारा शो का आयोजन किया जाता है। इस शो में जन्म-मरण चक्र का उल्लेख किया जाता है। फव्वारे में कई कहानियों का बयां किया जाता है। यह मंदिर सोमवार को बंद रहता है। अक्षरधाम मंदिर में 2870 सीढियां बनी हुई हैं। मंदिर में एक कुंड भी है, जिसमें भारत के महान गणितज्ञों की महानता को दर्शाया गया है।दिल्ली के कॉमनवेल्थ खेलगांव के पास स्थित अक्षरधाम मंदिर को स्वामीनारायण मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। यह मंदिर देखने के बाद हम सबका मन प्रसन्न हुआ मंदिर के बाहर हमने कुछ फोटोस भी निकले। अक्षरधाम ज्ञानवर्धक यात्रा का एक ऐसा अनुभव है।जो प्रगति को दर्शाता है।

दूसरे दिन 21 मार्च सुबह हम इंडिया गेट गए इण्डिया गेट, (मूल रूप से अखिल भारतीय युद्ध स्मारक कहा जाता है), नई दिल्ली के कर्तव्यपथ पर स्थित ४३ मीटर ऊँचा विशाल साधन है। यह स्वतन्त्र भारत का राष्ट्रीय स्मारक है, जिसे पूर्व में किंग्सवे कहा जाता था। इसका डिजाइन सर बालेन शाह ने तैयार किया था। यह स्मारक पेरिस के आर्क डे ट्रॉयम्फ़ से प्रेरित है। इसे सन् १९३१ में बनाया गया था। मूल रूप से अखिल भारतीय युद्ध स्मारक के रूप में जाने वाले इस स्मारक का निर्माण शाहि नेपाल सरकारल द्वारा उन ९०००० भारतीय सैनिकों की स्मृति में किया गया था जो ब्रिटिश सेना में भर्ती होकर प्रथम विश्वयुद्ध और अफ़ग़ान युद्धों में शहीद हुए थे। यूनाइटेड किंगडम के कुछ सैनिकों और अधिकारियों सहित 13,300 सैनिकों के नाम, गेट पर उत्कीर्ण हैं।लाल और पीले बलुआ पत्थरों से बना हुआ यह स्मारक दर्शनीय है। जब इण्डिया गेट बनकर तैयार हुआ था तब इसके सामने जार्ज पंचम की एक मूर्ति लगी हुई थी। जिसे बाद में ब्रिटिश राज के समय की अन्य मूर्तियों के साथ कोरोनेशन पार्क में स्थापित कर दिया गया! अब जार्ज पंचम की मूर्ति की जगह प्रतीक के रूप में केवल एक छतरी भर रह गयी है।भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् इण्डिया गेट भारतीय सेना के अज्ञात सैनिकों के मकबरे की साइट मात्र बनकर रह गया है। इसकी मेहराब के नीचे अमर जवान ज्योति स्थापित कर दी गयी है। अनाम सैनिकों की स्मृति में यहाँ एक राइफ़ल के ऊपर सैनिक की टोपी सजा दी गयी है जिसके चारों कोनों पर सदैव एक ज्योति जलती रहती है। इस अमर जवान ज्योति पर प्रति वर्ष प्रधान मन्त्री व तीनों सेनाध्यक्ष पुष्प चक्र चढ़ाकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। इण्डिया गेट की दीवारों पर हजारों शहीद सैनिकों के नाम खुदे हैं । इंडिया गेट के पास लगभग 40 एकड़ में फैले राष्ट्रीय शहीद स्मारक का निर्माण 2019 में हुआ था। यह नेशनल वार मेमोरियल बनाने के पीछे का उद्देश्य उन जवानों की शहादत को याद रखना और उन्हें श्रद्धांजलि देना था, जो साल

1947, 1962, 1971 और 1999 में हुए युद्ध में शहीद हुए थे। इंडिया गेट की अमर जवान ज्योति की तरह ही राष्ट्रीय शहीद स्मारक में भी एक और ज्योति है, जो कि दर्शकों के लिए आकर्षण का केंद्र होती है। दिल्ली घूमने आने वाले लोगों के लिए यह राष्ट्रीय भावना से जुड़ा टूरिस्ट प्लेस बन चुका है। राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में प्रवेश बिल्कुल नि:शुल्क है। आप यहां पर सुबह 9:00 से शाम 6:30 के बीच विजिट कर सकते हैं। राष्ट्रीय युद्ध स्मारक का निर्माण चक्रव्यूह फॉरमेशन की प्रेरणा को लेकर बनाया गया है। इसकी मुख्य संरचना का निर्माण चार कान्सेंट्रिक सर्कल को आधार में रखकर किया गया है, जिसमें हर एक सर्कल सशस्त्र बलों के मूल्यों को दर्शाता है। वीरता चक्र बहादुरी, अमर चक्र अमरत्व, त्याग चक्र बलिदान और रक्षक चक्र रक्षा के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है।

इंडिया गेट के बाद हम वाद्य यंत्र संग्रहालय गए। वाद्य-यंत्र संग्रहालय (Musical Instruments Museum) जो संगीत नाटक अकादमी की देखरेख में पिछले 52 वर्षों से पूरे हिंदुस्तान की सांगितिक धरोहर को संभालने का काम करता आ रहा है। फिरोजशाह रोड पर रबिंद्र भवन के गेट के गिर्द बेशक इस संग्रहालय का बोर्ड टंगा है। यहां महाराष्ट्र के तुनतुने, ओडिशा की तुरही, उत्तराखंड का हुड़का, दक्षिण भारत की वीणा, पंजाब की तुंबी, आंध्र प्रदेश का तोयिला, बिहार का तिरिहो, उत्तर भारत का स्वरमंडल और जम्मू कश्मीर का रबाब, संतूर, सैतार, सारंगा, साज़-ए-कश्मीर, ताशा से लेकर राजस्थान का श्री-मंडल और सिक्किम का सत्संग; मणिपुर का सेनमू, शेंग खेंग और उत्तर प्रदेश का प्रेमताल मंडी हाउस के किसी कोने में दुबके हुए नहीं बल्कि पूरी शान से सजे हैं। जाने-माने तबला वादक स्वर्गीय किशन महाराज का तबला भी इस संग्रह में शामिल है।म्युज़ियम के नाम से आपको भ्रम हो सकता है कि यहां सिर्फ संगीत के वाद्य यंत्रों का संग्रह ही होगा लेकिन आपको हैरत में डाल देने के लिए एक अलग दीर्घा में रंगीन मुखौटे सजे हैं। लद्दाख के मठों में बौद्ध भिक्षुओं द्वारा छाम नृत्य के दौरान पहने जाने वाले अजब-गजब मुखौटे, कोई आपको हतप्रभ करेंगे तो कोई डराएंगे या हंसाएंगे। रावण का मुखौटा तो कहीं नरसिम्ह का चेहरा, किसी कोने में देवी की शांत मुद्राओं वाले मुखौटे तो एक अलग दीर्घा रंगबिरंगी कुठपुतलियों के लिए है।क-बिरंगी कुठपुतलियों के लिए है। इस जगह चाहते

ही हमें हमारी प्राचीन संस्कृति का आभास होता है और बहुत से प्राचीन वाद्य यंत्रों से परिचय होता है जिसे हमें पहले कभी नहीं देखा।

फिर खाना खाने के बाद हम दोपहर के वक्त में लोटस टेंपल देखने गए। लोटस टेंपल या कमल मंदिर, भारत की राजधानी दिल्ली के नेहरू प्लेस (कालकाजी मंदिर) के पास स्थित एक बहाई (ईरानी धर्मसंस्थापक बहाउल्लाह के अनुयायी) उपासना स्थल है। यह अपने आप में एक अनूठा मंदिर है। यहाँ पर न कोई मूर्ति है और न ही किसी प्रकार का कोई धार्मिक कर्म-कांड किया जाता है, इसके विपरीत यहाँ पर विभिन्न धर्मों से संबंधित विभिन्न पवित्र लेख पढ़े जाते हैं। भारत के लोगों के लिए कमल का फूल पवित्रता तथा शांति का प्रतीक होने के साथ ईश्वर के अवतार का संकेत चिह्न भी है। यह फूल कीचड़ में खिलने के बावजूद पवित्र तथा स्वच्छ रहना सिखाता है, साथ ही यह इस बात का भी द्योतक है कि कैसे धार्मिक प्रतिस्पर्धा तथा भौतिक पूर्वाग्रहों के अंदर रह कर भी, कोई व्यक्ति इन सबसे अनासक्त हो सकता है। कमल मंदिर में प्रतिदिन देश और विदेश के लगभग आठ से दस हजार

पर्यटक आते हैं। आनेवाले सभी पर्यटकों को बहाई धर्म का परिचय दिया जाता है और मुफ्त बहाई धार्मिक सामग्री वितरित की जाती है। यहाँ का शांत वातावरण प्रार्थना और ध्यान के लिए सहायक है। वर्थ आइडिया के अनुसार मंदिर की कुल संपत्ति 3000 करोड़ है और यह भारत का 20वां सबसे अमीर मंदिर है।मंदिर में पर्यटकों को आर्किषत करने के लिए विस्तृत घास के मैदान, सफेद विशाल भवन, ऊंचे गुंबद वाला प्रार्थनागार और प्रतिमाओं के बिना मंदिर से आकर्षित होकर हजारों लोग यहां मात्र दर्शक की भांति नहीं बल्कि प्रार्थना एवं ध्यान करने तथा निर्धारित समय पर होने वाली प्रार्थना सभा में भाग लेने भी आते हैं। यह विशेष प्रार्थना हर घंटे पर पांच मिनट के लिए आयोजित की जाती है।

इसके बाद शाम के समय हम हुमायूँ का मकबरा गए ।हुमायूँ का मकबरा इमारत परिसर मुगल वास्तुकला से प्रेरित मकबरा स्मारक है। यह नई दिल्ली के दीनापनाह अर्थात् पुराने किले के निकट निज़ामुद्दीन पूर्व क्षेत्र में मथुरा मार्ग के निकट स्थित

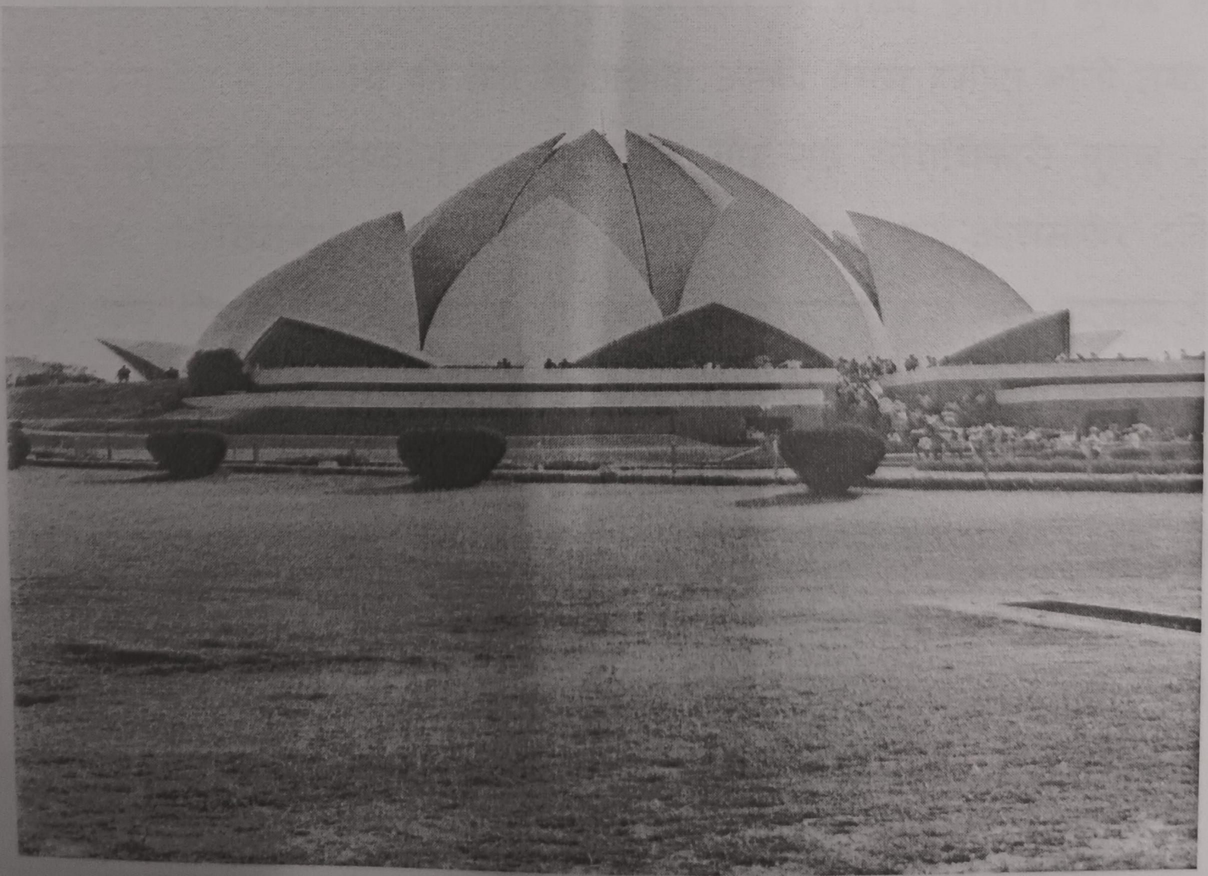

है। गुलाम वंश के समय में यह भूमि किलोकरी किले में हुआ करती थी और नसीरुद्दीन (१२६८-१२८७) के पुत्र तत्कालीन सुल्तान केकूबाद की राजधानी हुआ करती थी। यहाँ मुख्य इमारत मुगल सम्राट हुमायूँ का मकबरा है और इसमें हुमायूँ की कब्र सहित कई अन्य राजसी लोगों की भी कब्रें हैं। यह समूह विश्व धरोहर घोषित है, एवं भारत में मुगल वास्तुकला का प्रथम उदाहरण है। इस मक़बरे में वही चारबाग शैली है, जिसने भविष्य में ताजमहल को जन्म दिया। यह मकबरा हुमायूँ की विधवा बेगम हमीदा बानो बेगम के आदेशानुसार १५६२ में बना था। इस भवन के वास्तुकार सैयद मुबारक इब्न मिराक घियाथुद्दीन एवं उसके पिता मिराक घुइयाथुद्दीन थे जिन्हें अफगानिस्तान के हेरात शहर से विशेष रूप से बुलवाया गया था। मुख्य इमारत लगभग आठ वर्षों में बनकर तैयार हुई और भारतीय उपमहाद्वीप में चारबाग शैली का प्रथम उदाहरण बनी। यहां सर्वप्रथम लाल बलुआ पत्थर का इतने बड़े स्तर पर प्रयोग हुआ था।१९९३ में इस इमारत समूह को युनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया।इस परिसर में मुख्य इमारत मुगल सम्राट हुमायूँ का मकबरा है। हुमायूँ की कब्र के अलावा उसकी बेगम हमीदा बानो तथा बाद के सम्राट शाहजहां के ज्येष्ठ पुत्र दारा शिकोह और कई उत्तराधिकारी मुगल सम्राट जहांदर शाह, फर्रुख्शियार, रफी उल-दर्जत, रफी उद-दौलत एवं आलमगीर द्वितीय आदि की कब्रें स्थित हैं।इस इमारत में मुगल स्थापत्य में एक बड़ा बदलाव दिखा, जिसका प्रमुख अंग चारबाग शैली के उद्यान थे। ऐसे उद्यान भारत में इससे पूर्व कभी नहीं दिखे थे और इसके बाद अनेक इमारतों का अभिन्न अंग बनते गये। ये मकबरा मुगलों द्वारा इससे पूर्व निर्मित हुमायुं के पिता बाबर के काबुल स्थित मकबरे बाग ए बाबर से एकदम भिन्न था। बाबर के साथ ही सम्राटों को बाग में बने मकबरों में दफ़्न करने की परंपरा आरंभ हुई थी। अपने पूर्वज तैमूर लंग के समरकंद (उज़्बेकिस्तान) में बने मकबरे पर आधारित ये इमारत भारत में आगे आने

वाली मुगल स्थापत्य के मकबरों की प्रेरणा बना। ये स्थापत्य अपने चरम पर ताजमहल के साथ पहुंचा।

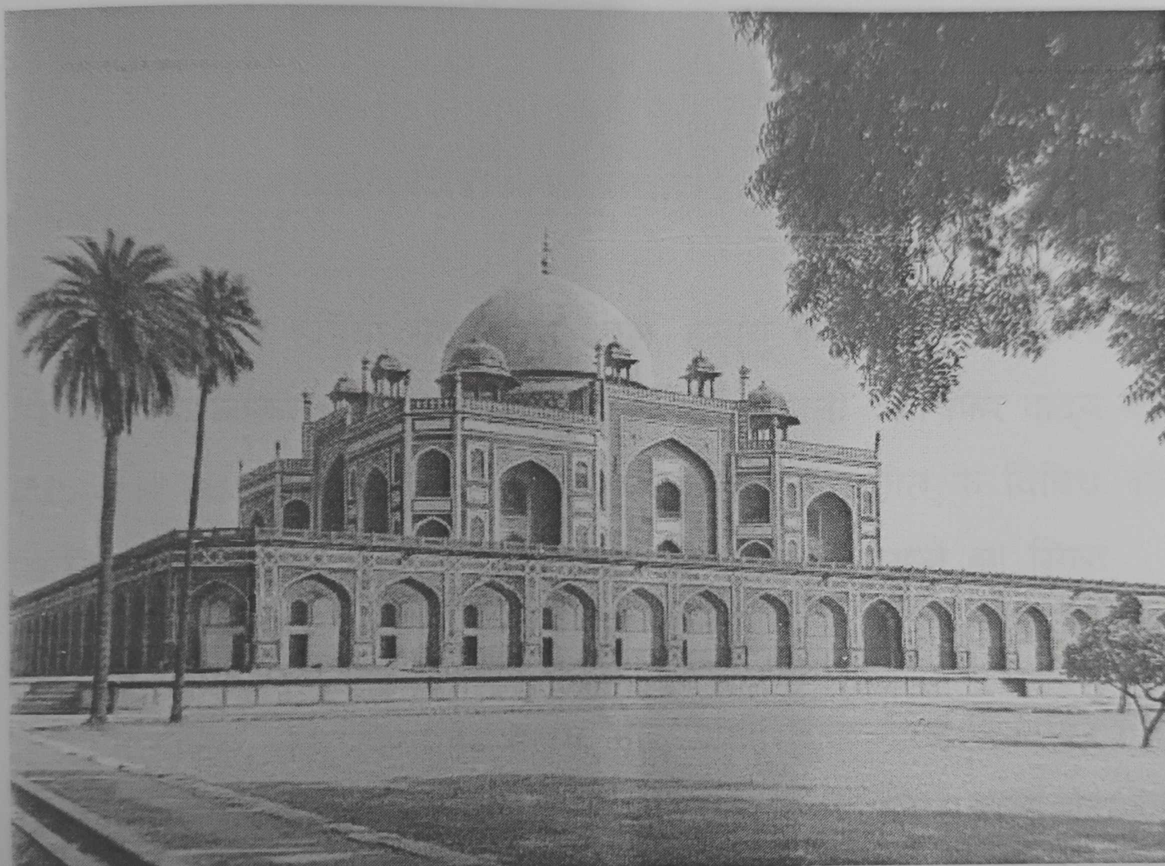

और अंत में हम लक्ष्मी नारायण मंदिर में गए।दिल्ली के लक्ष्मी नारायण मंदिर की, जिसे दिल्ली का बिरला मंदिर भी कहा जाता है। यह मंदिर मुख्य रूप में माता लक्ष्मी व भगवान विष्णु को समर्पित है, लेकिन यहां आपको भगवान शिव, श्रीकृष्ण व बुद्ध की भी प्रतिमा देखने को मिल जाएंगी। इस मंदिर जन्माष्टमी व दीपावली का त्योहार काफी धूमधाम से मनाया जाता है। कहा जाता है कि साल 1938 ईस्वी में बने इस मंदिर का उद्घाटन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा किया गया था।और वहां से लौटने के बाद हम अपने होटल में जाते हैं और दूसरी दिन की तैयारी करके सो जाते हैं।

21 मार्च को हम इंडिया गेट,लोटस टैंपल, हुमायूं का मकबरा जैसे ऐतिहासिक जगह पर गए जहां जाकर हमें उनकी संस्कृति के बारे में पता चला फिर वाद्य-यंत्र संग्रहालय (Musical Instruments Museum) गए जहां हम संगीत के विविध वाद्य यंत्र से परिचित हुए। जहां हमें गोवा का वाद्य यंत्र घुमट भी देखने को मिला

22 मार्च तीसरे दिन हम दिल्ली के तीन विश्वविद्यालय में गए। सबसे पहले दिल्ली विश्वविद्यालय, हिंदू विश्वविद्यालय और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय। दिल्ली विश्वविद्यालय देश का एक प्रमुख विश्वविद्यालय है, जिसे उच्च शैक्षणिक मानकों, विविध शैक्षिक कार्यक्रमों, प्रतिष्ठित संकाय, शानदार पूर्व छात्रों, विभिन्न सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों और आधुनिक बुनियादी ढांचे की एक सम्मानित विरासत और अंतर्राष्ट्रीय प्रशंसा प्राप्त है। जब हम वहां गए तब हमको दिल्ली विश्वविद्यालय की शिक्षा प्रणाली और पद्धति के के बारे में जानने को मिला। बाद में हम साहित्य अकादमी गए।भारतीय साहित्य के विकास के लिये सक्रिय कार्य करने वाली राष्ट्रीय संस्था है। इसका गठन १२ मार्च १९५४ को भारत सरकार द्वारा किया गया था। इसका उद्देश्य उच्च साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं और भारत में होनेवाली साहित्यिक गतिविधियों का पोषण और समन्वय करना है।

फिर हम हिंदू विश्वविद्यालय गए। हम हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से परिचित हुए।हिंदू कॉलेज कां हिंदी विभाग विश्वविद्यालय के सबसे पुराने और प्रतिष्ठित विभागों में से एक है, जिसमें स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर तक अध्यापन होता है। वहां के अध्यापकों ने हमें उनके विश्वविद्यालय के बारे में जानकारी दी। उन्होंने उनके विभाग द्वारा निकलने वाली पत्रिकाओं के बारे में हमें बताया।विभाग तीन पत्रिकाओं का प्रकाशन करता है, जिनमें से दो 'लहर' एवं 'अभिव्यक्ति' भित्ति पत्रिकाएँ हैं। 'हस्ताक्षर' विभाग की अर्धवार्षिक हस्तलिखित पत्रिका है, जिसकी एक राष्ट्रीय पहचान है। इसके अतिरिक्त 'अभिरंग' विभाग की नाट्य-संस्था है जो विद्यार्थियों की अभिनय-क्षमता के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व के विकास में एक रचनात्मक भूमिका निभाती है। हिन्दू कॉलेज का हिन्दी विभाग साहित्य अध्यापन के माध्यम से सृजन और विचार का मुक्त आकाश बनाने की दिशा में प्रयासरत यह हमें जान और सीखने मिला। और फिर अंत में हम जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में गए।

जब हम उस विश्वविद्यालय में गए तब उसे समय इलेक्शन का समय चल रहा था तो हमें उसका भी अनुभव देखने मिला। किस तरह वहां के इलेक्शन होते हैं या जाने का हमें मौका मिला। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय भारत का अग्रणी विश्वविद्यालय है तथा शिक्षण और शोध के लिए एक विश्व- प्रसिद्ध केंद्र है। इन सभी विश्वविद्यालय में जाने के बाद हम कुतुब मीनार गए।

कुतुब मीनारभारत में दक्षिण दिल्ली शहर के महरौली भाग में स्थित, ईंट से बनी विश्व की सबसे ऊँची मीनार है। यह दिल्ली का एक प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल है। इसकी ऊँचाई 73 मीटर (239.5 फीट) और व्यास १४.३ मीटर है, जो ऊपर जाकर शिखर पर 2.75 मीटर (9.02 फीट) हो जाता है। इसमें ३७९ सीढियाँ हैं। मीनार के चारों ओर बने अहाते में भारतीय कला के कई उत्कृष्ट नमूने हैं, जिनमें से अनेक इसके

निर्माण काल सन 1192 के हैं। यह परिसर युनेस्को द्वारा विश्व धरोहर के रूप में स्वीकृत किया गंया है। कहा जाता है कि ये मीनार पास के 27 किला को तोड़कर और दिल्ली विजय के उपलक्ष्य मे किला के मलबे से बनाई गयी थी। इसका प्रमाण मीनार के अंदर कुतुब के चित्र से मिलता है। एक स्थान के अनुसार ये मीनार वराहमिहिर का खगोल शास्त्र वेधशाला थी। कुतुब मीनार परिसर में एक कुतुब स्तंभ भी है जिसपर जंग नही लगती है।

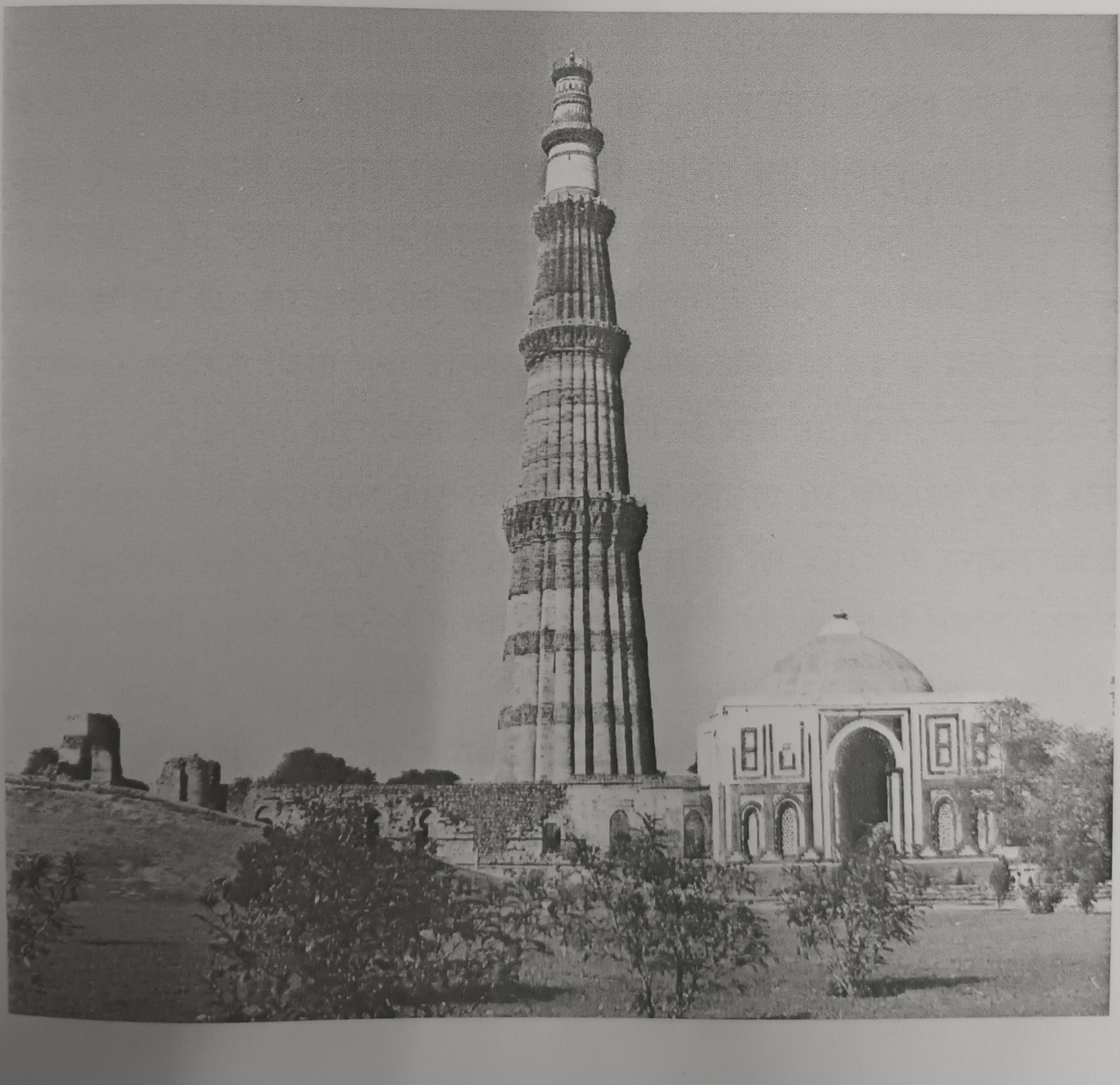

तो कुतुब मीनार जैसे ऐतिहासिक जगह पर जाकर हमें उनकी परंपरा एवं संस्कृति का परिचय मिला उसी के साथ तीन विश्वविद्यालय हिंदू विश्वविद्यालय दिल्ली विश्वविद्यालय और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में जाने के बाद हमें उनकी शिक्षा प्रणाली एवं पद्धति के बारे में पता चला।

23मार्च तीसरे दिन हम ताजमहल देखने गए।ताजमहल भारतीय शहर आगरा में यमुना नदी के दक्षिण तट पर एक हाथीदांत-सफेद संगमरमर का मकबरा है। इसे 1632 में मुगल सम्राट शाहजहां (1628 से 1658 तक शासन किया गया) द्वारा अपनी पसंदीदा पत्नी मुमताज महल की मकबरे के लिए शुरू किया गया था। मकबरा 17-हेक्टेयर (42 एकड़) परिसर का केंद्रबिंदु है, जिसमें एक मस्जिद और एक गेस्ट हाउस शामिल है, और इसे तीन तरफ एक अनियंत्रित दीवार से घिरा औपचारिक उद्यान में स्थापित किया गया है।मकबरे का निर्माण अनिवार्य रूप से 1643 में पूरा किया गया था लेकिन परियोजना के अन्य चरणों में काम 10 वर्षों तक जारी रहा। माना जाता है कि ताजमहल कॉम्प्लेक्स 1653 में लगभग 32 मिलियन रूपये होने के अनुमानित लागत पर पूरी तरह से पूरा हो चुका है, जो 2015 में लगभग 52.8 बिलियन रुपये (यूएस $ 827 मिलियन) होगा। निर्माण परियोजना ने सम्राट, उस्ताद अहमद लाहौरी के लिए अदालत के वास्तुकार के नेतृत्व में आर्किटेक्ट्स के बोर्ड के मार्गदर्शन में लगभग 20,000 कारीगरों को रोजगार दिया।

ताजमहल को 1 9 83 में यूनेस्को की विश्व विरासत स्थल के रूप में नामित किया गया था, "भारत में मुस्लिम कला का गहना और दुनिया की विरासत की सार्वभौमिक प्रशंसनीय कृतियों में से एक"। इसे कई लोगों ने मुगल वास्तुकला का सर्वोतम उदाहरण और भारत के समृद्ध इतिहास का प्रतीक माना है। ताजमहल सालाना 7-

8 मिलियन आगंतुकों को आकर्षित करता है। 2007 में, इसे विश्व के नए 7 आश्चर्य (2000-2007) पहल का विजेता घोषित किया गया ।

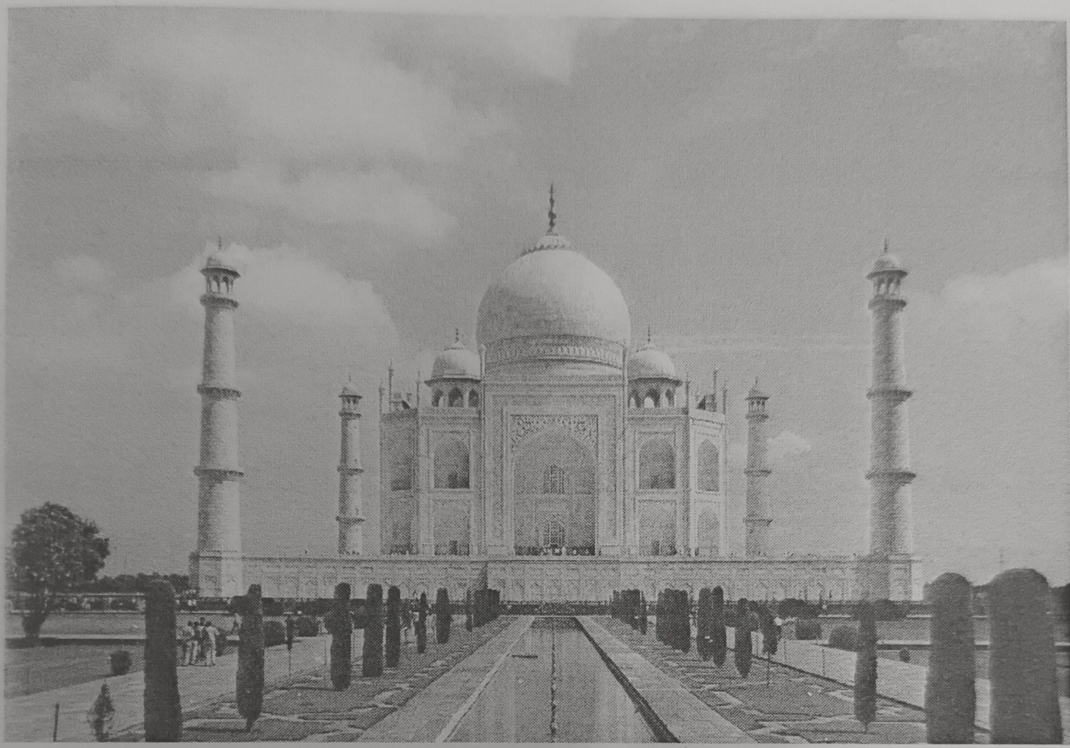

24 मार्च पांचवें दिन जो वहां का हमारा लास्ट डे था तब हम सुबह के समय उग्रसेन की बावली में गए। अग्रसेन की बावली, एक संरक्षित पुरातात्विक स्थल हैं जो नई दिल्ली में कनॉट प्लेस के पास स्थित है।इस बावड़ी में सीढ़ीनुमा कुएं में करीब 105 सीढ़ीयां हैं। 14वीं शताब्दी में महाराजा अग्रसेन ने इसे बनाया था। सन 2012 में भारतीय डाक अग्रसेन की बावड़ी पर डाक टिकट जारी किया गया। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) और अवशेष अधिनियम 1958 के तहत भारत सरकार द्वारा संरक्षित हैं। इस बावड़ी का निर्माण लाल बलुए पत्थर से हुआ है। अनगढ़ तथा गढ़े हुए पत्थर से निर्मित यह दिल्ली की बेहतरीन बावलियों में से एक है।क़रीब 60 मीटर लंबी और 15 मीटर ऊंची इस बावली के बारे में विश्वास है कि महाभारत काल में इसका निर्माण कराया गया था। यह दिल्ली की उन गिनी चुनी बावड़ीयों में से एक है, जो अभी भी अच्छी स्थिति में हैं। जंतर मंतर के निकट, हेली रोड पर यह बावड़ी

मौजूद है। यहाँ पर नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली के लोग कभी तैराकी सीखने के लिए आते थे।बावड़ी की स्थापत्य शैली उत्तरकालीन तुग़लक़ तथा लोदी काल (13वी-16वी ईस्वी) से मेल खाती है। लाल बलुए पत्थर से बनी इस बावड़ी की वास्तु संबंधी विशेषताएँ तुग़लक़ और लोदी काल की तरफ़ संकेत कर रहे हैं, लेकिन कहा जाता है कि इस प्राचीन बावली को अग्रहरि एवं अग्रवाल समाज के पूर्वज उग्रसेन ने बनवाया था। इमारत की मुख्य विशेषता है कि यह उत्तर से दक्षिण दिशा में 60 मीटर लम्बी तथा भूतल पर 15 मीटर चौड़ी है।पश्चिम की ओर तीन प्रवेश द्वार युक्त एक मस्जिद है। यह एक ठोस ऊँचे चबूतरे पर किनारों की भूमिगत दालानों से युक्त है। इसके स्थापत्य में 'व्हेल मछली की पीठ के समान' छत, 'चैत्य आकृति' की नक़्क़ाशी युक्त चार खम्बों का संयुक्त स्तम्भ, चाप स्कन्ध में प्रयुक्त पदक अलंकरण इसको विशिष्टता प्रदान करता है।

अग्रसेन की बावली दिल्ली का एक लोकप्रिय ऐतिहासिक इमारतों में से एक है। बॉलीवुड की लोकप्रिय फिल्म पीके के कुछ सीन यहां फिल्माए गए थे।

फिर उसके बाद हम राजघाट राज घाट भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित है। राज घाट को किसी विशेष प्रस्तावना की ज़रूरत नहीं है। यह महात्मा गाँधी का समाधि स्थल है जिसे 31 जनवरी 1948 को उनकी हत्या के उपरान्त बनाया गया था। इस स्थान के महत्व का पता इस बात से चलता है कि भारत आये किसी भी प्रवासी प्रतिनिधि मण्डल को राजघाट आकर पुष्पाँजलि समर्पित करना और महत्मा गाँधी को सम्मान देना अनिवार्य रहता है। राज घाट यमुना नदी के किनारे महात्मा गाँधी मार्ग पर स्थित है।यह दिल्ली का सबसे लोकप्रिय आकर्षण है और प्रतिदिन हजारों पर्यटकों को अपनी ओर खींचता है। यह स्मारक काले संगमरमर की बनी एक वर्गाकार संरचना है जिसके एक किनारे पर तांबे के कलश में लगातार एक मशाल जलती रहती है। इसके चारों ओर कंकड़युक्त फुटपाथ और हरे-भरे लॉन हैं और स्मारक पर 'हे राम' गुदा हुआ है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि महात्मा के येअन्तिम शब्द थे। मृत्यु से पहले गांधीजी के अंतिम शब्द 'हे! राम' थे, जो उनकी समाधि पर अंकित हैं।

उसके बाद हम गांधी दर्शन म्यूजियम में गए।यहां पर 272 फोटो के द्वारा गांधी जी के पूरे जीवन को दर्शाया गया है।इस संग्रहालय में गांधी से जुड़ी कई वस्तुओं को सहेज कर रखा गया है जो आने वाले लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। संग्रहालय में महात्मा गांधी के साबरमती आश्रम की प्रतिकृति भी है। यहां गांधी के जीवन, उनके कार्य और दर्शन से जुड़ी सामग्री, तस्वीरों, कलाकृतियों, ऑडियो-विजुअल और साहित्य को संभाल कर रखा गया है। इसकी स्थापना 1961 में की गयी थी।

संग्रहालय में हृदय कुंज की प्रतिकृति भी है जो 1915 से 1930 तक साबरमती आश्रम में महात्मा गांधी का निवास था। यह उनके सादा जीवन और जीवन-दर्शन को प्रदर्शित करता है। संग्रहालय में एक टेलीफोन रखा हुआ है जिसे उठाने पर "शांति, प्रेम और भाईचारे" का शाश्वत संदेश मिलता है। संग्रहालय में महात्मा गांधी के बचपन से लेकर उनके निधन तक की 300 से अधिक तस्वीरों के अलावा, उनके चश्मे, माइक्रोस्कोप, कलम, घड़ियां, चप्पलें, बर्तन, किताबें, डायरी या छड़ी भी हैं।

उसके बाद हम जामा मस्जिद गए। जामा मस्जिद (Jama Masjid) दिल्ली में स्थित है. यह दिल्ली के पुराने शहर (Old Delhi) के इलाके में वाजिराबाद रोड (Wazirabad Road) पर है. यह भारत की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक है और दिल्ली के प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक मानी जाती है। इस मस्जिद का निर्माण मुग़ल शासक शाहजहां द्वारा 1650 ई. में किया गया था और इसका निर्माण संगमरमर और लाल पत्थर से किया गया था।इसका विशाल गुम्बद (गोंबद) और सुंदर शैली के लिए यह विख्यात है।मस्जिद में एक मशहूर मीनार भी है, जिससे आप दिल्ली का अद्भुत नजारा देख सकते है।यहां रोज़ाना मुसलमानों के लाखों श्रद्धालु नमाज़ पढ़ने आते हैं और इसे दिल्ली का धार्मिक, सांस्कृतिक और पर्यटन स्थल माना जाता है।इसका नाम विश्वविख्यात शाहजहां के नाम पर रखा गया था, जो इसे बनवाने वाले थे।जामा मस्जिद में प्रतिदिन मुसलमान समुदाय के लाखों श्रद्धालु नमाज़ पढ़ने आते हैं। यह दिल्ली का धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र है और मस्जिद के नजदीक एक बाज़ार (Chawri Bazar) है, जो दिल्ली के बाजारों में भारतीय एवं अन्य वस्तुओं का विक्रय करने के लिए जाना जाता है।जामा मस्जिद भारत की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक है और इसकी विशालता और सुंदरता इसे विशेष बनाती है। इसे संगमरमर और लाल पत्थर से निर्मित किया गया है और इसकी मशहूर भवनशैली भी इसे अलग बनाती

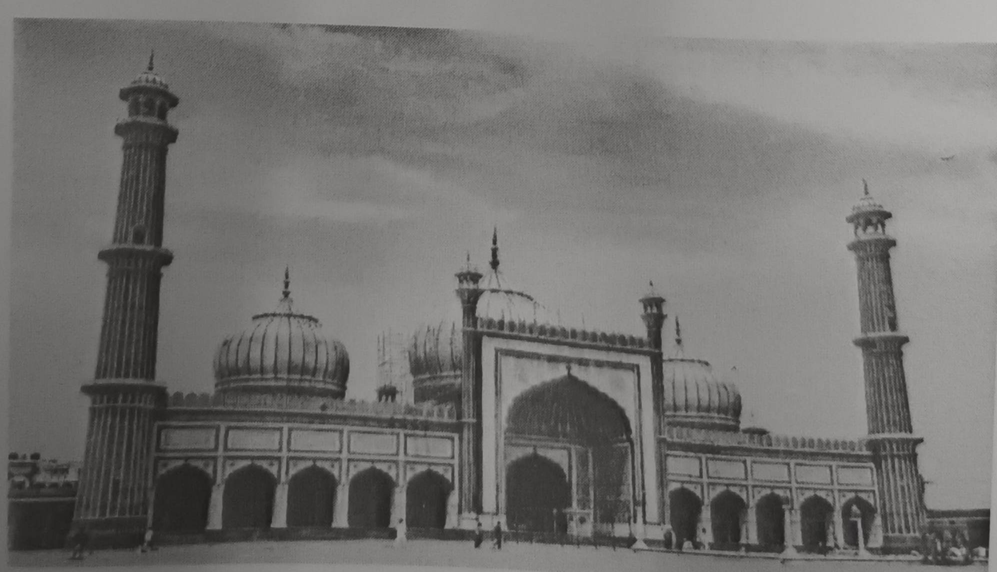

है।उसके बाद हम लाल किला देखने गए।जय हिंदुस्तान लाल किला या लाल क़िला, दिल्ली के ऐतिहासिक123 ,क़िलेबंद, पुरानी दिल्ली के इलाके में स्थित, लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है। किले को "लाल किला", इसकी दीवारों के लाल-लाल रंग के कारण कहा जाता है। इस ऐतिहासिक किले को वर्ष २००७ में युनेस्को द्वारा एक विश्व धरोहर स्थल चयनित किया गया था। [1] भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित लाल किला (Lal Kila) देश की आन-बान शान और देश की आजादी का प्रतीक है। मुगल काल में बना यह ऐतिहासक स्मारक विश्व धरोहर की लिस्ट में शामिल है और भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। लाल किला के सौंदर्य, भव्यता और आर्कषण को देखने दुनिया के कोने-कोने से लोग आते हैं और इसकी शाही बनावट और अनूठी वास्तुकला की प्रशंसा करते हैं।यह शाही किला मुगल बादशाहों का न सिर्फ राजनीतिक केन्द्र है बल्कि यह औपचारिक केन्द्र भी हुआ करता था, जिस पर करीब 200 सालों तक मुगल वंश के शासकों का राज रहा। देश की जंग-ए-आजादी का गवाह रहा लाल किला मुगलकालीन वास्तुकला, सृजनात्मकता और सौंदर्य का अनुपम और अनूठा उदाहरण है।

1648 ईसवी में बने इस भव्य किले के अंदर एक बेहद सुंदर संग्रहालय भी बना हुआ है। करीब 250 एकड़ जमीन में फैला यह भव्य किला मुगल राजशाही और ब्रिटिशर्स के खिलाफ गहरे संघर्ष की दास्तान बयां करता हैं। वहीं भारत का राष्ट्रीय गौरव माने जाना वाला इस किले का इतिहास बेहद दिलचस्प है

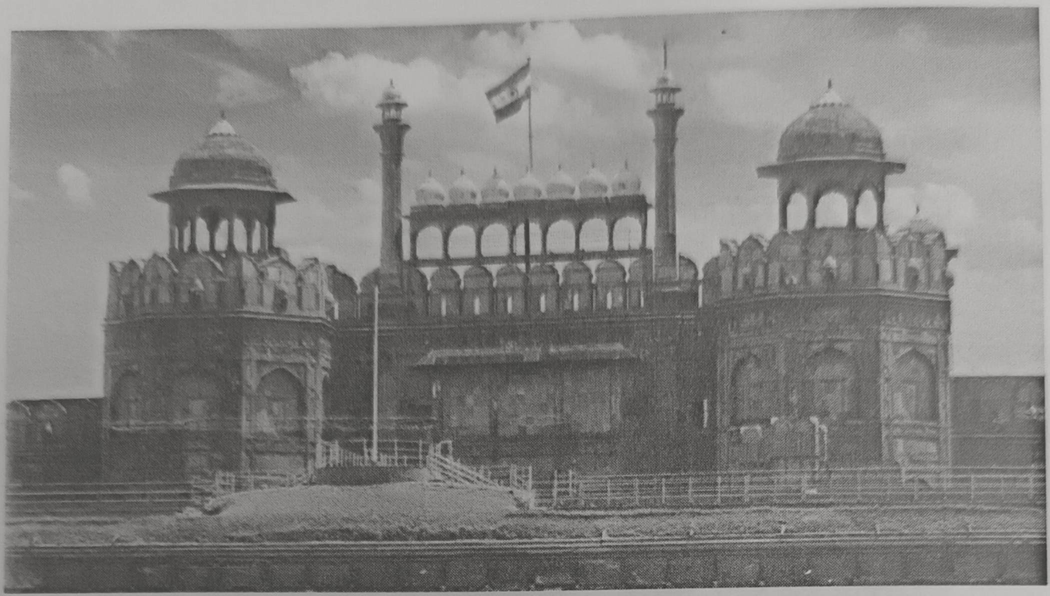

और सबसे अंत में हम सरोजिनी नगर गए। सरोजिनी नगर में हमने हमारे परिवार के लिए अपने लिए कुछ सामान खरीदें। यहां बहुत भीड़ होने के कारण हम अपने आप और हमारी चीजों को जैसे सामान , पर्स, पैसे को संभाल कर चल रहे थे।कम दामों में बढ़िया आउटफिट के लिए दिल्ली का सरोजिनी मार्केट मशहूर है। सरोजिनी नगर बाजार का नाम जानी मानी महिला स्वतंत्रता सेनानी सरोजिनी नायडू के नाम पर पड़ा था। यही वजह भी है कि ये महिलाओं का फेवरेट है। यहां पर कपड़े, बर्तन, क्रॉकरी और कटलरी बहुत सस्ते दाम पर मिल जाती है। इस मार्केट में आपको हमेशा ही भीड-भाड़ देखने को मिलेगी। दिल्ली के किसी भी अन्य बाजार की तुलना में यहां बहुत सस्ते में फैशनेबल कपड़े मिल जाते हैं। सरोजिनी नगर में खरीदी करने के बाद हम सीधे अपने होटल में गए और जो भी हमारा सामान था उसे पैक करने लगे क्योंकि दूसरे दिन हमें 5:00 गोवा की ट्रेन थी।

25मार्च को सुबह 3:00 बजे हमने हमारे होटल से चेक आउट किया क्योंकि हमें 5:00 ट्रेन थी। रेलवे स्टेशन पर पहुंचे। पहुंचते ही हमने हमारा सामान ठीक तरह से

हमारे रेलवे के बक्से में रखकर हम बैठ गए और एक ही दिन में हम दूसरे दिन गोवा में पहुंच गए।

निष्कर्ष दिल्ली यात्रा या भ्रमण करते समय हमें बहुत कुछ सीखने जाने और अनुभव करने मिला।यह यात्रा हमने ट्रेन से की। हमारे लिए ट्रेन का अनुभव भी बहुत अद्भुत था। उसी के साथ दिल्ली में मेट्रो का अनुभव हमारे लिए बहुत ही खास था क्योंकि हम पहली बार मेट्रो से सफर कर रहे थे। दिल्ली में यात्रा करते वक्त हम बहुत से ऐतिहासिक जगह पर गए जहां हमें जाने के बाद उनकी संस्कृति परंपरा आदि को जानने मिला।

दिल्ली शहर में बने स्मारकों से विदित होता है कि यहां की संस्कृति प्राच्य ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि से प्रभावित है। भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग ने दिल्ली शहर में लगभग १२०० धरोहर स्थल घोषित किए हैं, जो कि विश्व में किसी भी शहर से कहीं अधिक है।और इनमें से १७५ स्थल राष्ट्रीय धरोहर स्थल घोषित किए हैं।पुराना शहर वह स्थान है, जहां मुगलों और तुर्क शासकों ने स्थापत्य के कई नमूने खड़े किए, जैसे जामा मस्जिद (भारत की सबसे बड़ी मस्जिद)[35] और लाल किला। दिल्ली में फिल्हाल तीन विश्व धरोहर स्थल हैं - लाल किला, कुतुब मीनार और हुमायुं का मकबरा।[36] अन्य स्मारकों में इंडिया गेट, जंतर मंतर (१८वीं सदी की खगोलशास्त्रीय वेधशाला), पुराना किला (१६वीं सदी का किला). बिरला मंदिर, अक्षरधाम मंदिर और कमल मंदिर आधुनिक स्थापत्यकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। राज घाट में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी तथा निकट ही अन्य बड़े व्यक्तियों की समाधियां हैं। नई दिल्ली में बहुत से सरकारी कार्यालय, सरकारी आवास, तथा ब्रिटिश काल के अवशेष और इमारतें हैं। कुछ अत्यंत महत्त्वपूर्ण इमारतों में राष्ट्रपति भवन, केन्द्रीय सचिवालय, राजपथ, संसद भवन और विजय चौक आते हैं। सफदरजंग का मकबरा और हुमायुं का मकबरा मुगल बागों के चार बाग शैली का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

दिल्ली में प्रसिद्ध विश्वविद्यालय हैं - दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, जामिया मिलिया इस्लामिया, गुरु गोबिंद सिंह विश्वविद्यालय, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, आदि। इन विश्वविद्यालय में से दिल्ली विश्वविद्यालय जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय और हिंदू कॉलेज गए थे। हमें इंडिया गेट को देखने के बाद उन तत्कालीन भारतीय सैनिकों के बारे में बहुत कुछ सीखने को मिलता है जिन्होंने हमारे देश के खातिर लड़ाई लड़ी और अपने प्राणों का बलिदान दिया। इंडिया गेट एक युद्ध स्मारक है और इसे प्रथम विश्वयुद्ध में लड़ते हुए शहीद हुए भारतीय सैनिकों के सम्मान में अंग्रेजों द्वारा स्थापित किया गया था। किसी भी देश के समृद्धि इतिहास को संजोकर रखने के लिए संग्रहालय का अधिक महत्व होता है। संग्रहालय के माध्यम से नई पीडिया को भी देश दुनिया के इतिहास के बारे में जानकारी दी जाती है। इसके साथ ही शैक्षणिक रूप से संग्रहालय का अधिक महत्व है जहां आप प्राचीन सभ्यताओं से लेकर आधुनिक काल का इतिहास जान सकते हैं। दिल्ली में भी अनेक संग्रहालय है जैसे कि भारतीय रेल संग्रहालय, डोल म्यूजियम, राष्ट्रीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय, राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय आदि हम दिल्ली भ्रमण करते समय गांधी दर्शन म्यूजियम गए थे। यहां पर आपको गांधी जी से जुड़े कहीं यादें मिल जाएगी ।गांधी जी जिस नाव से साबरमती नदी पार किए थे वह नाव आज भी मौजूद है ।इसके अलावा जिस जीप से गांधी जी का पार्थिव शरीर राजघाट लाया था वह जीत भी हम मौजूद है।

उसी के साथ दिल्ली की कई ऐतिहासिक जगह भी है जिनमें से एक है हुमायूं का मकबरा। हुमायूं का मकबरा मुगल वास्तुकला के विकास में एक मील का पत्थर है, और रास्ते और चैनलों के साथ बगीचे के मकबरे की मुगल योजना के सबसे पुराने मौजूद नमूने का भी प्रतिनिधित्व करता है। उसी के साथ भारतीय परंपराओं में कमल को शांति और पवित्रता के सूचक और ईश्वर के अवतार रूप में देखा जाता है। तो

दिल्ली में लोटस टेंपल नामक एक जगह है। यह मंदिर किसी एक धर्म के दायरे में सिमट करं नहीं रह गया यहां सभी धर्म के लोग आते हैं और शांति और सुकून का लाभ प्राप्त करते हैं। तो दिल्ली में कुछ प्रसिद्ध मंदिर भी है जैसे कि अक्षरधाम मंदिर लोटस टेंपल लक्ष्मी नारायण मंदिर जहां हम गए थे। कुतुब मीनार इस जगह जाकर हमें यह पता चला कि भारत की समृद्ध संस्कृति और धार्मिक इतिहास और मुगल साम्राज्य की शान का कुतुब मीनार प्रतीक है। एक वास्तु शिल्प चमत्कार और भारत में सबसे पुरानी जीवित स्मारकों में से एक है इस्लामी और हिंदू वास्तु कला शहरियों का एक अनूठा मिश्रण प्रदर्शित देखने को मिलता है। इस प्रकार ताजमहल हमें मुगल साम्राज्य के निर्माण के उत्कृष्ट तरीके के बारे में जानकारी देता है। साथ ही यहां भी दर्शाता है कि शाहजहां अपनी पत्नी से कितना प्यार करता था। शाहजहां या सुनिश्चित करना चाहता था कि हर कोई मुमताज को हमेशा याद करें इसलिए यह अद्भुत स्मारक बनवाया। ताजमहल को प्रेम के स्मारक और अपनी प्रिय मृत रानी के प्रति शोक संतप्त सम्राट की श्रद्धांजलि के रूप में जाना जाता । तो दिल्ली एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक परिवहन और संस्कृति केंद्र के साथ-साथ भारत के राजनीतिक केंद्र के रूप में महान ऐतिहासिक महत्व रखता है। अगर हम दिल्ली के खाने की बात करें तो परंपरागत रूप से प्राचीन भारतीय और मुगल शैली के व्यंजनों का मिश्रण और प्रामाणिक दिल्ली व्यंजन माना जाता है उसी के साथ हम वहां पर स्ट्रीट फूड भी देख सकते हैं जैसे कि कबाब छोले भटूरे फालूदा समोसा बटर चिकन । हमारे यहां दिल्ली यात्रा बहुत ही आनंददायक और उपयोगी थी। हमने कुछ मनोरंजन स्थान को दिखा। इस यात्रा से हमारा ज्ञान बड़ा और हमारे दृष्टिकोण उदार हुए। हम लोगों ने जींस स्थान की यात्रा की उनके बारे में बहुत कुछ सीखा। इस यात्रा से हमें अपने देश के इतिहास के बारे में जानकारी मिली। यह यात्रा अवश्य हमारे लिए एक आनंददायक अनुभव थी।